माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत
(Population Theory of Malthus)

थामस रार्बट माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत जनसंख्या में वृद्धि तथा खाद्यान्न उत्पत्ति में संबंध की व्याख्या करता है। माल्थस ने 1798 में जनसंख्या के सिद्धांत पर एक लेख (An Essay on the Principle of Population, 1798) में अपने जनसंख्या संबंधी सिद्धांत का प्रतिपादन किया। उन्होंने यह सिद्धांत अनेक तात्कालिक परिस्थितियों, प्रचलित आशावादी विचारों, अपने यूरोपीय देशों के भ्रमण के दौरान विभिन्न देशों की जनसंख्या का विकास का गहन अध्ययन कर प्रतिपादित किया था। इस सिद्धांत का कथन है कि "जनसंख्या में जीवन निर्वाह साधनों की अपेक्षा तीव्र गति से बढ़ने की प्रवृत्ति होती है।"

इस प्रकार यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि खाद्यपूर्ति की अपेक्षा जनसंख्या में अधिक तेजी से वृद्धि होती है और यदि इस जनसंख्या वृद्धि पर रोक न लगाई गई तो परिणामस्वरूप दुराचार या विपत्ति (Vice or misery) उत्पन्न हो जाती है। इस प्रकार माल्थस ने अपने निबंध में आशावादी विचारों को चकनाचूर कर दिया और एक कष्ट पूर्ण समाज की कल्पना की।

मान्यताएं (Assumptions)

1. स्त्री एवं पुरुष के बीच काम भावना स्वाभाविक है। इस प्रकार पुरुष की प्रजनन शक्ति (fecundity) तथा संतान उत्पत्ति की इच्छा यथावत रहती है। यह शिक्षा तथा सभ्यता की प्रगति से अप्रभावित है।
2. मनुष्य को जीवित रहने के लिए भोजन अनिवार्य है तथा कृषि में उत्पत्ति ह्रास नियम लागू होता है।
3. आर्थिक संपन्नता में वृद्धि के साथ-साथ मनुष्य में संतानोत्पादन की इच्छा भी तीव्र रहती है तथा जीवन स्तर में कमी होने पर यह घटती है।

जनसंख्या ज्यामिती अनुपात से बढ़ती है

माल्थस का कथन है कि "अनियंत्रित जनसंख्या ज्यामितिक - दर (Geometrical Ratio) से बढ़ती है।" उनका विचार है कि स्त्रियों और पुरुषों के मध्य सदा यौन आकर्षण रहा है और रहेगा। यौन इच्छा स्वाभाविक और अत्यंत प्रबल है फलतः संतान उत्पत्ति भी स्वाभाविक परिणाम है। यदि जनसंख्या को नियंत्रित नहीं किया गया तो वह प्रत्येक 25 वर्ष में दुगुनी हो जायेगी। जैसा कि उन्होंने स्वयं लिखा है — "अगर जनसंख्या को रोका न गया (संयम द्वारा) तो जनसंख्या प्रत्येक 25 वर्ष में दुगुने हो जाने

की प्रवृत्ति रखती है। जनसंख्या के ज्यामितीय अनुपात को इस प्रकार दर्शाया जा सकता है — 1, 4, 8, 16, 32, 64 यानि हर 25 वर्ष बाद ये दुगनी हो जाती है।

खाद्य सामग्री अंकगणितीय अनुपात में बढ़ती है — मानव के जीवन और अस्तित्व के लिए खाद्य सामग्री आवश्यक है। किन्तु जिस दर से जनसंख्या में वृद्धि होती है उस दर से खाद्य सामग्री में वृद्धि नहीं होती है। खाद्य सामग्री में अंकगणितीय अनुपात में ही वृद्धि होती है, क्योंकि कृषि उत्पादन में क्रमागत उत्पत्ति ह्रास नियम लागू होता है अर्थात् जैसे जैसे खेत में पूंजी और श्रम की मात्रा बढ़ाई जाती है वैसे वैसे सीमान्त उत्पादन घटता जाता है। खाद्य सामग्री के अंकगणितीय अनुपात को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है — 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 आदि क्रम में। संक्षेप में, यदि अन्य बातें समान रहें, तो प्रकृति द्वारा उत्पादित खाद्य सामग्री अंकगणितीय अनुपात में बढ़ती है और मानव स्वयं तेजी से ज्यामितीय अनुपात में बढ़ता है।

जनसंख्या एवं खाद्य सामग्री में असंतुलन

माल्थस के अनुसार जनसंख्या और खाद्य सामग्री दोनों में वृद्धि होती है पर वृद्धि दर में अंतर होने के कारण दोनों के मध्य असंतुलन की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। क्योंकि जनसंख्या में वृद्धि ज्यामितीय दर से होती है, जबकि इसकी तुलना में अंकगणितीय दर से बढ़ने वाली खाद्य सामग्री पीछे रह जाती है। जैसे जहाँ 5 वर्षों में खाद्य सामग्री में 1, 2, 3, 4, 5 अर्थात् 5 गुनी वृद्धि होती है वहीं जनसंख्या में इतनी ही अवधि में ज्यामितीय अनुपात में 1, 2, 4, 8, 16 अर्थात् 16 गुनी वृद्धि हो जाती है। 5 और 16 के मध्य का अंतर खाद्य और जनसंख्या के असंतुलन को प्रदर्शित करता है। माल्थस का कहना था कि यह असंतुलन अनेक कष्टदायी परिणामों को उत्पन्न करता है। खाद्य सामग्री और जीवन-स्तर में वृद्धि के बाद जनसंख्या बढ़ती है। उन्होंने स्वयं लिखा है "Prosperity was not to depend on population but population was to depend on prosperity."

जनसंख्या पर प्रतिबंध या अवरोध

माल्थस ने जनसंख्या नियंत्रण के दो प्रकार के प्रतिबंधों का उल्लेख किया है —

(i) नैसर्गिक या प्राकृतिक अवरोध (Positive or Natural Checks)

इसके अंतर्गत युद्ध, बीमारियाँ, अकाल, बाढ़, भूकंप आदि घटित होते जाते हैं, जो काफी कष्टदायक होते हैं।

(ii) प्रतिबंधात्मक अवरोध (Preventive checks)

माल्थस ने जनसंख्या नियंत्रण का दूसरा प्रतिबंध मानवीय प्रयत्न को माना है। चूंकि प्राकृतिक प्रतिबंध मानव के लिए अत्यंत दुःखद एवं कष्टदायक हैं अतः मनुष्य को प्रतिबंधात्मक उपायों से जनसंख्या पर नियंत्रण लगाना चाहिए। प्रतिबंधात्मक (निरोधक) उपाय दो प्रकार के होते हैं –

(a) नैतिक प्रतिबंध – इसके अंतर्गत संयम, ब्रह्मचर्य, विलम्ब विवाह आते हैं, इन्हीं के द्वारा जनसंख्या नियंत्रण का सुझाव दिया है।

(b) कृत्रिम निरोध के अंतर्गत माल्थस इन्हें पाप की श्रेणी में रखता है।

आलोचनाएँ –

वर्तमान देशों में यह माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत विश्व में पूर्णतः लागू नहीं होता है, समय के साथ-साथ अन्य उपाय भी जनसंख्या नियंत्रण का आधार बन गए हैं।